महिला-पंच श्रीमती भौती

लगभग 46-47 वर्ष पहले श्रीमती भौती का जन्म नदबई तहसील के पीपरऊ गांव में हुआ था। पिता का देहांत बचपन में ही हो गया था। मां ने बड़ी हिम्मत से 8 बेटियों और एक बेटे का लालन-पालन किया। उनके पास 40 बीघा खेत था।

''घर के कामकाज व खेत के काम के कारण हम पढ़-लिख नहीं सकी मगर हममें आत्मविश्वास की कोई कमी नहीं है। यह हमने अपनी मां से विरासत में पाया है'' श्रीमती भौती का कहना है। वह बताती हैं कि उनकी मां ने उन्हें और उनकी अन्य बहनों को कभी खेलने जाने से नहीं रोका।

13 वर्ष की आयु में भौती जी का ब्याह नदबई तहसील के गांव हंतरा के निवासी श्री रतनसिंह फौज़दार के साथ हुआ। पति के यहां भी खेती थी। वह पढ़े-लिखे नहीं थे लेकिन बड़े आजाद ख़्यालात के थे। लड़कियों की शिक्षा के समर्थक थे। 30 वर्ष तक वह पंच रहे। टी.बी. हो जाने के कारण इस्तीफा दे दिया। लेकिन उन्होंने अपनी पत्नी श्रीमती भौती को पंचायत में आने के लिए उत्साहित किया।

पंच बनीं

आज श्रीमती भौती के पति की मृत्यु को तीन साल हो गए हैं। वह साढ़े तीन वर्ष से पंच हैं। वह पंचायत की बैठकों में बिना घूंघट काढ़े बैठती हैं। महिलाओं की समस्याओं पर विचार-विमर्श करती हैं। उनसे दूसरी महिलाओं को हिम्मत व प्रेरणा मिलती है। गांव की सभी महिलाएं उनकी तारीफ करती हैं। श्रीमती भौती के तीन बेटे और एक बेटी है। उनकी बहुओं का कहना है कि उनकी सास उन्हें बेटियों की तरह प्यार करती हैं।

हाल ही में गांव में दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति खुली है। वह खुद उसकी सदस्या हैं। अन्य बहनों को भी उससे जोड़ने की कोशिश में लगी हैं। वह महिला मंडल बनाने की भी सोच रही हैं। वह हस्तकला में भी बेहद निपुण हैं। उनका कहना है कि उनके पति ने उन्हें सीख दी थी कि सच्चाई और ईमानदारी से काम करना चाहिए। दूसरों की मदद करनी चाहिए। वह गांव में कोई भी गलत काम होता देखकर उसके विरोध में बोलती हैं। वह गांव की महिलाओं के लिए रोज़गार शुरू करवाना चाहती हैं जिससे उनकी आमदनी बढ़ सके। वह स्वयं साक्षर होने की भी कोशिश कर रही हैं।

—रीता चतुर्वेदी